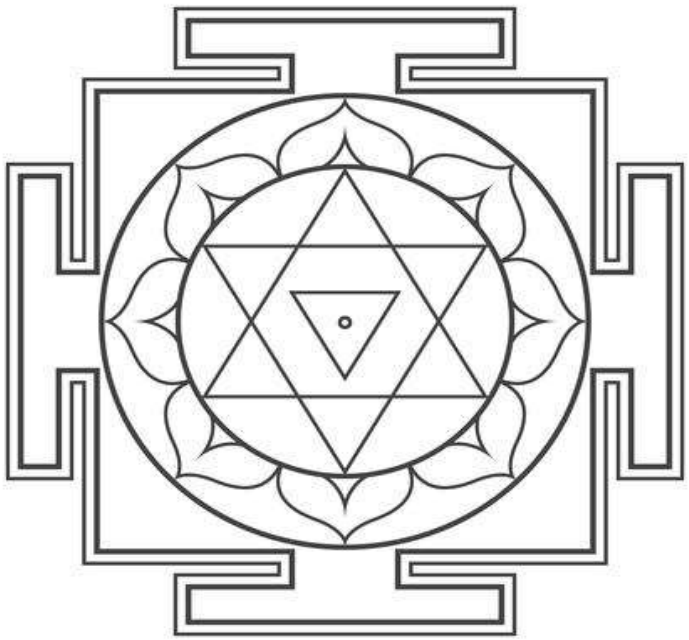

सौजन्य: मां पाताल भैरवी मन्दिर, श्री बर्फानीधाम, राजनांदगांव, छत्तीसगढ़, भारत

धूमावती : सप्तम महाविद्या

धूमावती देवी महाविद्याओं में सातवें स्थान पर परिगणित हैं । इनके सन्दर्भ में कथा आती है कि एक बार भगवती पार्वती भगवान् शिव के साथ कैलाश पर्वत पर बैठी हुई थीं । उन्होंने महादेव से अपनी क्षुधा का निवारण करने का निवेदन किया । कई बार माँगने पर भी जब भगवान् शिव ने उस ओर ध्यान नहीं दिया, तब उन्होंने महादेव को ही उठाकर निगल लिया । उनके शरीर से धूमराशि निकली । शिवजी ने उस समय पार्वती से कहा कि 'आपकी सुन्दर मूर्ति धूएँ से ढक जाने के कारण धूमावती या धूम्रा कही जायगी ।' धूमावती महाशक्ति अकेली है तथा स्वयं नियन्त्रि का है । इसका कोई स्वामी नहीं है, इसीलिए इसे विधवा कहा गया है । दुर्गासप्तशती के अनुसार इन्होंने ही प्रतिज्ञा की थी 'जो मुझे युद्ध में जीत लेगा तथा मेरा गर्व दूर कर देगा, वही मेरा पति होगा । ऐसा कभी नहीं हुआ, अतः यह कुमारी हैं', ये धन या पति रहित हैं अथवा अपने पति महादेव को निगल जाने के कारण विधवा हैं ।

नारदपाञ्चरात्र के अनुसार इन्होंने अपने शरीर से उग्रचण्डिका को प्रकट किया था, जो सैकड़ों की तरह आवाज करने वाली थी, शिव को निगलने का तात्पर्य है, उनके स्वामित्व का निषेध । असुरों के कच्चे माँस से इनकी अंगभूता शिवाएँ तृप्त हुईं, यही इनकी भूख का रहस्य है । इनके ध्यान में इन्हें विवर्ण, चंचल, काले रंगवाली, मैले कपड़े धारण करने वाली, खुले केशों वाली, विधवा, काकध्वज वाले रथ पर आरूढ़, हाथ में सूप धारण किये, भूख-प्यास से व्याकुल तथा निर्मम आँखों वाली बताया गया है । स्वतन्त्र तन्त्र के अनुसार सती ने जब दक्षयज्ञ में योगाग्नि के द्वारा अपने-आपको भस्म कर दिया। तब उस समय जो धुआँ उत्पन्न हुआ उससे धूमावती-विग्रह का प्राकटय हुआ था ।

धूमावती की उपासना विपत्ति-नाश, रोग-निवारण, युद्ध-जय, उच्चाटन तथा मारण आदि के लिये की जाती है । शाक्त प्रमोद में कहा गया है कि इनके उपासक पर दुष्टाभिचार का प्रभाव नहीं पड़ता है । संसार में रोग-दुख के कारण चार देवता हैं । ज्वर, उन्माद तथा दाह रुद्र के कोप से, मूर्च्छा, विकलाङ्गता यम के कोप से, धूल, गठिया, लकवा, वरुण के कोप से तथा शोक, कलह, क्षुधा, तृषा आदि निर्ऋति के कोप से होते हैं । शतपथ ब्राह्मण के अनुसार धूमावती और निर्ऋति एक हैं । यह लक्ष्मी की ज्येष्ठा है, अतः ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न व्यक्ति जीवनभर दुःख भोगता है ।

तन्त्र ग्रन्थों के अनुसार धूमावती उग्रतारा ही हैं, जो धूम्रा होने से धूमावती कही जाती हैं । दुर्गासप्तशती में वाभ्रवी और तामसी नाम से इन्हीं की चर्चा की गयी है । ये प्रसन्न होकर रोग और शोक को नष्ट कर देती हैं तथा कुपित होने पर समस्त सुखों और कामनाओं को नष्ट कर देती हैं । इनकी शरणागति से विपत्तिनाश तथा सम्पन्नता प्राप्त होती है । ऋग्वेदोक्त रात्रिसूक्त में इन्हें सुतरा कहा गया है । 'सुतरा' का अर्थ सुख पूर्वक तारने योग्य है । तारा या तारिणी को इनका पूर्व रूप बतलाया गया है । इसलिये आगमों में इन्हें अभाव और संकट को दूर कर सुख प्रदान करने वाली भूति कहा गया है । धूमावती स्थिरप्रज्ञता की प्रतीक है । इनका काकध्वज वासनाग्रस्त मन है , जो निरन्तर अतृप्त रहता है । जीव की दीनावस्था भूख, प्यास, कलह, दरिद्रता आदि इसकी क्रियाएँ हैं, अर्थात् वेद की शब्दावली में धूमावती कद्रु है, जो वृत्रासुर आदि को पैदा करती है । (गीता प्रेस से साभार...)

भगवती धूमावती को दारिद्र्य की देवी भी माना जाता है इसलिये इन्हे अलक्ष्मी भी कहा गया है । भगवती धूमावती की उपासना चातुर्मास में की जाती है । आषाढ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी का समय वर्षाकाल का होता है, यह अवधि देवताओं के लिए सुषुप्तकाल कहा गया है और इतने दिनों तक आसुरप्राण का साम्राज्य होता है इस कारण सनातन धर्म में शुभकार्य जैसे विवाह, यज्ञोपवीत, तीर्थयात्रा जैसे कार्य निषिद्ध होते हैं । इसी चातुर्मास में निर्ऋति का सम्राज्य रहता है। इस अवधि में नरक चतुर्दशी जो कि कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को होता है, इसी रात्रि दरिद्ररूपा अलक्ष्मी अथवा अन्य नाम अरोहिणी , ज्येष्ठा का आगमन होता है और दूसरे दिन रोहिणी रूपा लक्ष्मी का शुभागमन होता है । तात्पर्य यह है कि चातुर्मास की अवधि में भगवती घूमावती का प्रभाव रहता है अतः इस काल में इनकी स्तुतति-उपासना कल्याणकारी मानी गई है ।

भगवती धूमावती का मन्त्र अष्टाक्षरों में **धूं धूं धूमावती स्वाहा** है जिसके ऋषि **पिप्पलाद** हैं, मन्त्र का बीज **धूं** है, शक्ति **स्वाहा** है और कीलक **धूमावति** है । मतान्तर में **धूं धूं धूमावती ठः ठः** मन्त्र भी प्राप्त हाता है। यहां **धूं धूं धूमावती स्वाहा** मन्त्र से सपर्या एवं चार आवरणों की पूजा प्रक्रिया का वर्णन किया जा रहा है । भगवती के हवन में गिलोय की प्रधानता कही गई है । इनकी उपासना करने वाला व्यक्ति कभी शत्रु से पराजित नहीं होता । चूंकि धूमावती वैधव्य हैं अतः इनका कोई शिव नहीं होता । यह पहले ही उल्लेख किया जा चुका है कि पूजोपचार की सभी प्रक्रिया लगभग एक समान हैं, इनकी पूजा में बस भैरव की पूजा नहीं होती है क्योंकि ये तो स्वयं उन्हे अपना ग्रास बना लेने के कारण विधवा हैं । इनकी उपासना से साधक का शत्रुभय समाप्त हो जाता है और भगवती का अनुग्रह प्राप्त होने पर साधक का सर्वत्र कल्याण ही होता है ।

ॐ धूम्राभां धूम्रवस्त्रां प्रकटितदशनां मुक्तवालाम्बराढ्यां,
काकाङ्कस्यन्दनस्थां धवलकरयुगां शूर्पहस्तातिरूक्षाम् ।
नित्य क्षुत्क्षामदेहां मुहुरतिकुटिलां वारिवांछाविचित्रां,
ध्यायेद्धूमावतीं वानयनयुगलां भीतिदां भीषणास्याम् ।।
कल्पादौ या कालिकाद्याऽचीकलन्मधुकैटभौ ।
कल्पान्ते त्रिजगत्सर्वं धूमावतीं भजामि ताम् ।।